

# डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 15, कुछ मौखिक रिपोर्टों/अफवाहों पर पौलुस की प्रतिक्रिया, 1 कुरिन्थियों 5:5-13

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह व्याख्यान 15 है, कुछ मौखिक रिपोर्टों/अफवाहों पर पॉल की प्रतिक्रिया। 1 कुरिन्थियों 5:5-13.

खैर, व्याख्यान 15 में आपका स्वागत है क्योंकि हम 1 कुरिन्थियों 5 में आगे बढ़ते हैं और इस अध्याय को पूरा करने की ओर बढ़ते हैं। हमने विशेष रूप से श्लोक 1 से 4 को देखा, और अब हम श्लोक 5 पर आ गए हैं, जिसे हम इस पर नोट्स के विस्तार के रूप में करने जा रहे हैं। लेकिन 5 कहता है, इस आदमी को शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंप दो।

मैं 2011 NIV पढ़ रहा हूँ। अगर मैं 20 पढ़ रहा होता, माफ़ करना, अगर मैं मूल NIV पढ़ रहा होता, तो इसमें पापी स्वभाव के विनाश के बारे में लिखा होता, जिसके लिए मैं आभारी हूँ कि नए NIV, संशोधन ने इसे हटा दिया है क्योंकि यह एक अच्छा अनुवाद नहीं था क्योंकि इसमें कुछ अलग निहित था जो मुझे लगता है कि इस पाठ के बारे में है। शरीर का विनाश ताकि उसकी आत्मा प्रभु के दिन बच सके।

ठीक है, तो हमारे पास एक ऐसा आदमी है जिसने अपनी सौतेली माँ से शादी की और उसे रोमन समाज के मानकों के अनुसार भी पॉल द्वारा अनाचार का दोषी पाया गया है। चर्च इस आदमी के व्यवहार के बारे में अहंकारी था, शायद इसलिए क्योंकि वह अहंकारी था। यह बहुत संभव है कि वह या तो कोई परोपकारी व्यक्ति रहा हो या कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति रहा हो, जिसने चर्च के नैतिक निर्णय को धीमा कर दिया।

उसने संभवतः उस महिला से दोबारा विवाह कर लिया, जो सब कुछ उचित प्रतीत होता था, और सभी ने कहा, ठीक है, जो भी हो, और हम वहाँ से आगे बढ़ेंगे। पॉल ने उस लाइन को नहीं माना, और उसने यह बहुत स्पष्ट रूप से कहा है। अब, वह 5.5 पर आता है, जहाँ वह चर्च को निर्देश देता है कि उन्हें क्या करना चाहिए।

उसने कहा कि तुम्हें इकट्ठा होना चाहिए, और जब तुम हो, तो श्लोक 5 में, तुम्हें उसे शैतान के हवाले कर देना चाहिए। खैर, अनुशासन का क्षेत्र, पृष्ठ 70 के मध्य में, नोट्स में विस्तृत किया गया है, और अनुशासन का क्षेत्र शैतान को सौंपना है। यह एक दिलचस्प वाक्यांश है जिसका उपयोग किया गया है।

सटीक वाक्यांश का उपयोग केवल 1 तीमुथियुस 1:20 में कहीं और किया गया है। आप कुछ अन्य स्थानों की तुलना कर सकते हैं जिनके संदर्भ समान हैं, लेकिन शैतान को सौंपने का यह वाक्यांश, ऐसा लगता है कि कुरिन्थियों और तीमुथियुस में वाक्यांश का सीधा अर्थ बहिष्कार है।

शैतान, ईश्वर के एक एजेंट के रूप में, अन्य स्थितियों में भी होता है, चाहे आप अय्यूब में हों या आप बाइबल के अन्य भागों में हों।

शैतान को ईश्वर के एजेंट के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन चर्च द्वारा मनुष्य को शैतान के हवाले करने का क्या मतलब है? और अगर वे उसे शैतान के हवाले करते हैं, तो क्या यह शैतान के व्यक्तित्व के लिए है, या फिर यह क्या है? ग्रीक और उसके कुरान के अभिशाप सूत्र के बीच संबंध। कुछ लोगों ने इस बारे में बात की है कि यह एक तरह से अभिशाप सूत्र है, और विद्वानों ने इस पर गौर किया है। हम इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे।

शैतान किस अर्थ में इसमें शामिल है? खैर, मैं यह कहना चाहूँगा कि मुझे नहीं लगता कि अधिकांश विद्वान इसे इस तरह से देखते हैं कि ईश्वर ने शैतान के साथ एक समझौता किया है ताकि भटके हुए ईसाइयों की देखभाल की जा सके। ईश्वर शैतान के साथ मिलीभगत नहीं करता। शैतान एक सृजित प्राणी है, किसी भी तरह से ईश्वर के बराबर नहीं है, और ईश्वर के रूप में, ईश्वर के आदेश का पालन करता है।

और फिर भी, यहाँ कोई प्रकाश और अंधकार नहीं चल रहा है। शैतान अंधकार है, लेकिन मुझे लगता है कि उसे शैतान को सौंपना एक रूपक से ज़्यादा है। क्योंकि बाइबल में, परमेश्वर द्वारा परिभाषित क्षेत्र से बाहर होना, उदाहरण के लिए, चर्च, आइए इसे एक छतरी के रूप में सोचें, आप जानते हैं, अच्छी छतरी।

और चर्च छतरी है, और जब हम यीशु को जानते हैं, हम चर्च में आते हैं, हम आत्मा द्वारा चर्च में फोरेंसिक रूप से बपतिस्मा लेते हैं, हम शरीर के सदस्य हैं, हम छतरी के नीचे हैं। ठीक है, तो हम अंदर हैं, और फिर हमारे पास इस तरह का एक बड़ा उल्लंघन है। न केवल यह एक नैतिक उल्लंघन है, बल्कि अहंकार इसे दूसरे स्तर पर ले जाता है, और कोई पश्चाताप नहीं दिखता है।

और परिणामस्वरूप, इस व्यक्ति को बहिष्कृत करने के लिए चर्च से बाहर रखा जाना चाहिए। अब, इस छतरी के बाहर क्या है? खैर, छतरी के बाहर दुनिया, चर्च, दुनिया है। हम दुनिया में हैं, लेकिन दुनिया के नहीं हैं, लेकिन हम भगवान की छतरी के नीचे हैं।

और इसलिए, जब इस आदमी को चर्च से निकालकर दुनिया में डाल दिया जाता है, तो वह अब छतरी के नीचे नहीं रहता। अब, दुनिया शैतान का क्षेत्र है। वह इस दुनिया का, विश्व व्यवस्था का परमेश्वर है।

और इसलिए, यह व्यक्ति, आप जानते हैं, हम सवाल पूछ सकते हैं, क्या वह ईसाई है? लेकिन ऐसा लगता है कि उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है जैसे कि वह ईसाई हो। उसे छतरी की सुरक्षा से बाहर निकालकर दुनिया के तत्वों में डाल दिया गया है। मुझे लगता है, पाठ में निहितार्थ यह है कि यह उसे उसके कार्यों के बारे में सोचने के लिए मजबूर करेगा।

उसे शैतान के हवाले करने और उसे शैतान के अधिकार में सौंपने की यह घटना, और मैंने आपको यहाँ कई अंश दिए हैं जहाँ चर्च चर्च का अधिकार क्षेत्र है और शैतान का अधिकार क्षेत्र है, आप पाठ पढ़ सकते हैं, और आप देखेंगे कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन यह पुराने

जॉनी कार्सन शाम के शो का सादृश्य नहीं है, नमस्ते जॉनी, या क्षमा करें, यहाँ जॉनी है, यही एड मैकमोहन कहा करते थे। खैर, यह नमस्ते शैतान नहीं है, यहाँ जॉन है, यहाँ यह पापी आदमी है।

यह बिलकुल भी ऐसी बात नहीं है। बल्कि शैतान का क्षेत्र वह है जो चर्च के घेरे से बाहर है। उस छतरी के नीचे से दुनिया में मनुष्य को बाहर रखा गया है, और शैतान इस दुनिया का ईश्वर है।

उसे शैतान के राज्य में सौंप दिया गया है, और वह बाहर है। घेरे में, भगवान की सुरक्षा और देखभाल है। वहाँ समुदाय है।

लेकिन घेरे के बाहर, व्यक्ति असुरक्षित होता है। अब, उसके पास ऐसे अन्य मित्र हो सकते हैं जो कहते हैं, अच्छा, तुम आखिरकार उस झंझट से बाहर निकल आए, है न? लेकिन अगर उसका आंतरिक अस्तित्व वास्तव में परिवर्तित और बदल गया है, तो बाहर निकाले जाने से दर्द होता है। अपने पूर्व बुतपरस्त दोस्तों को यह कहते हुए सुनना कि उसने बदलाव के लिए कुछ अच्छा किया है, जबकि वह जानता है कि उसने ऐसा नहीं किया है, दर्द देता है।

और यह सब मिलकर उसका ध्यान खींच सकता है। वह ईश्वर की सुरक्षा से बाहर है। यह मोक्ष का मुद्दा नहीं है।

उसे शैतान के हवाले करना कोई मुक्तिदायक मार्ग नहीं है। उसे शैतान के हवाले करना एक अनुशासनात्मक मार्ग है। उम्मीद है कि उसे नुकसान से बचाया जाएगा, क्योंकि उसे सुरक्षा की छत्रछाया से बाहर निकाल दिया गया है, और वह अपने दम पर है।

यह अनुशासन का मुद्दा है जो एक गलती करने वाले आस्तिक को उसके मार्ग की गलती दिखाने के लिए बनाया गया है। तो, यह वाक्यांश का उपयोग है। अब, वाक्यांश का महत्व।

इसका महत्व यह है कि यह संचार का एक वाक्यांश है, ठीक वैसे ही जैसे कि तीमुथियुस में है। नया समुदाय यीशु द्वारा शैतान को दी गई प्रारंभिक पराजय पर आधारित था। केली के यहाँ दिए गए कथन के अनुसार, जिस क्षेत्र में मसीह का कार्य सक्रिय था, उससे बहिष्कृत होना, अर्थात् बहिष्कृत होना, उस क्षेत्र में वापस धकेल दिया जाना था, जिस पर शैतान का अधिकार अभी भी था।

ये सभी एक ही बात कह रहे हैं। बहिष्कार के साथ-साथ समय-समय पर न्याय का अलौकिक प्रदर्शन भी हो सकता है। जब अन्नियास और सफीरा को झूठ बोलते हुए पाया गया, तो परमेश्वर ने उन्हें मृत्युदंड देकर उनका न्याय किया।

हो सकता है कि शरीर का नाश इस व्यक्ति की मृत्यु तक पहुँच जाए। मैं चर्च में ऐसे लोगों की निजी कहानियाँ जानता हूँ जिन्होंने जघन्य पाप किए हैं, लेकिन उनका पश्चाताप नहीं किया, और कभी-कभी तो उन पापों को लोगों से छिपा दिया और खुद को मौत के घाट उतार दिया। सच कहूँ तो, यही एक सच्चे आस्तिक की निशानी है।

पापी अपने पापों के कारण शोक नहीं मनाते। सच्चा विश्वासी ऐसा करता है, और चर्च में कई बार ऐसा हुआ है। प्रेरितों के काम अध्याय 5 और अन्य स्थानों में भी ऐसा हुआ है।

इस अनुशासन की व्याख्या यह है कि यह शरीर का विनाश है। मैंने इसे एक वस्तुनिष्ठ संबंधकारक कहा है, अर्थात्, शरीर का विनाश होता है, लेकिन किस अर्थ में? अब, यह वह बिंदु है जिस पर मूल NIV ने शरीर का अनुवाद पापी स्वभाव के रूप में किया है। जो लोग उस विशेष दृष्टिकोण को मानते थे, उन्होंने तर्क दिया कि यदि आप इस व्यक्ति को दुनिया में लाते हैं, और यदि वे वास्तव में एक ईसाई हैं, तो वे इतना बुरा महसूस करेंगे कि उनकी पापी प्रवृत्ति को संबोधित किया जाएगा, उन्हें पश्चाताप के लिए लाया जाएगा, और वे अपने पश्चाताप में चर्च में क्षमा के लिए वापस आएंगे।

विद्वानों की आम सहमति यह है कि पापी प्रकृति का रूपक इस बारे में सोचने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है। हमें शरीर के दृष्टिकोण से शरीर के बारे में सोचना चाहिए, कि वे अलग-अलग तरीकों से शारीरिक रूप से पीड़ित होने जा रहे हैं। यहां तक कि शारीरिक पीड़ा का मनोदैहिक पहलू भी काम कर सकता है यदि यह व्यक्ति सच्चा आस्तिक है।

वे खुद शोक मना सकते थे, लेकिन अपनी जिद के कारण, पश्चाताप करने और अपने पाप को स्वीकार करने से इनकार कर देते थे। ESV में लिखा है, इस व्यक्ति को शैतान के हवाले कर दो ताकि शरीर नष्ट हो जाए, और फिर NIV में इस व्यक्ति को शैतान के हवाले कर दो ताकि पापी स्वभाव नष्ट हो जाए। ये दोनों दृष्टिकोण वास्तव में एक ही परिणाम मानते हैं।

वह व्यक्ति पश्चाताप करने जा रहा है, यह सारा न्याय और बहिष्कार उसका ध्यान आकर्षित करने जा रहा है, और वह चर्च में वापस आने जा रहा है और नुकसान से सुरक्षित होने के अर्थ में मुक्ति प्राप्त करने जा रहा है। यह अभिशाप का मुद्दा नहीं है, लेकिन यह नुकसान का मुद्दा है। खैर, हम इस सब का अंतिम परिणाम पूरी तरह से नहीं जानते हैं, हालाँकि, जैसा कि हम थोड़ी देर बाद उल्लेख करेंगे, 2 कुरिन्थियों में वास्तव में बाद के समय में इस व्यक्ति का उल्लेख हो सकता है।

ठीक है, तो चलिए स्पष्टीकरण के बारे में कुछ मुद्दों पर विचार करते हैं। सबसे पहले, व्यक्तिगत शरीर का दृष्टिकोण। आप इसे औपचारिक दृष्टिकोण, अभिशाप और मृत्यु कह सकते हैं।

यह बिल्कुल पारंपरिक दृष्टिकोण है। मैंने कई नाम सूचीबद्ध किए हैं। विनाश का मतलब बीमारी है और बीमारी जो मृत्यु तक भी जाती है।

यह दृष्टिकोण मांस पर आधारित है, जिसका तात्पर्य भौतिक शरीर से है, जिसे कुमरान और जादुई पपीरी जैसी चीजों में पाए जाने वाले अभिशाप सूत्र के अनुरूप एक सूत्र के साथ शैतान को सौंप दिया जाता है। शारीरिक दंड, मृत्यु के लिए सौंपना, उपचारात्मक के रूप में देखा जाता है, जो व्यक्ति को अंतिम समय के लिए बचाता है। यह भी एक वाक्यांश है कि वे अंत में बच सकते हैं।

दूसरे शब्दों में, अनुशासन एक ऐसी चीज़ है जो उनका ध्यान खींचती है, और अगर वे वास्तव में आस्तिक हैं, तो वे इससे दूर नहीं जाएंगे। यह उन्हें परेशान करेगा, भले ही वे तुरंत पश्चाताप न

करें। यह सुविधाजनक है अगर 2 कुरिन्थियों में जिस व्यक्ति को वापस लाया गया है, उसका संदर्भ वही व्यक्ति है।

यह इस व्याख्या के लिए बहुत उपयोगी है ताकि हम बहिष्कार की प्रभावशीलता को देख सकें, लेकिन यह एक ऐसी व्याख्या है जो समझ से परे है। गारलैंड इस दृष्टिकोण की कुछ विस्तार से आलोचना करते हैं। उनका कहना है कि जब आप 1 कुरिन्थियों 11 में भोज के संबंध में मरने वाले व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं या आप हनन्याह और सफ़ीरा के बारे में बात कर रहे हैं तो समानांतर पाठ एक ही तरह के संदर्भ नहीं हैं।

खैर, यह एक व्यक्ति की दृष्टि से है, दूसरे व्यक्ति की दृष्टि से भी। दावा किए गए शापित ग्रंथ वास्तविक समानताएं नहीं हैं, और यह एक वैध आलोचना होगी। पॉल ने वास्तव में उन शापित ग्रंथों को प्रभावित किया होगा जो रहस्य धर्मों में बाद में आते हैं, न कि उनसे प्रभावित होकर।

बाद में रब्बी के विचार कि दुख और मृत्यु वास्तव में पिछले पापों का प्रायश्चित्त करते हैं, मोक्ष और क्षमा के बारे में पॉल के दृष्टिकोण के विपरीत है। प्राचीन संस्कृति में, समूह से बहिष्कार बहुत गंभीर माना जाता था। क्योंकि उन प्राचीन संस्कृतियों में, चाहे वह गिल्ड ऑफ सिल्वरस्मिथ्स, या गिल्ड ऑफ टेंटमेकर्स, या गिल्ड ऑफ ऑरेंटर्स जैसे गिल्ड से बहिष्कार हो, अपने गिल्ड से बहिष्कृत होना आपको अंधकार में डाल देता है।

अब आपके पास कोई व्यापार नहीं है। अब आपके पास अपनी आजीविका तक पहुंच नहीं है क्योंकि आपको बहिष्कृत कर दिया गया है। प्राचीन दुनिया में, आप आज की तरह स्वतंत्र रूप से घूम नहीं सकते थे और अपने अतीत को ऐसे दफना देते थे जैसे कि उसका अस्तित्व ही न हो।

यह आसानी से हासिल नहीं हुआ। प्राचीन संस्कृति में, यह बहिष्कार बहुत गंभीर था। किसी नए समूह में विलय होना स्वाभाविक नहीं होगा।

आज, आप अपने चर्च से असहमत हो सकते हैं, या अपने चर्च द्वारा निंदा की जा सकती है, और सड़क पार जाकर खुले हाथों से आपका स्वागत किया जा सकता है। मुझे लगता है कि चर्च में यह एक दुखद स्थिति है। इसके अलावा, कॉर्पोरेट निकाय के दृष्टिकोण का एक दूसरा विचार है, जो केवल व्यक्तिगत निकाय नहीं है।

यह समुदाय से व्यक्ति को निष्कासित करने और इस प्रकार शैतान के दायरे में जाने का कथन है, ताकि समूह से खमीर को साफ किया जा सके। यह समुदाय के रूप में समूह को शुद्ध कर रहा है। यह भी समझ में आता है।

यौन पाप निजी मामले नहीं हैं। वास्तव में, बाइबल में सभी पापों में से, यौन पापों को सबसे अधिक दूसरे लोगों से जुड़ा हुआ देखा जाता है, कभी-कभी सीमित समूह से, और फिर पूरे बड़े समूह से, पुराने और नए नियम दोनों में। यह दृष्टिकोण, सामूहिक निकाय दृष्टिकोण, पॉल को व्यक्ति के बजाय समूह को संबोधित करने के लिए जिम्मेदार ठहराता है, जो पाठ के विवरण में बहुत प्रमुख है।

पुराने नियम में संपूर्ण पवित्रता के लिए बहिष्कार से लेकर निष्कासन तक की शिक्षा दी गई है। यह एक ऐसा मूल भाव है जो पुराने नियम में बहुत आम है। मनुष्य को परमेश्वर की सुरक्षा के दायरे से बाहर रखना उसे शैतान की ताकतों के सामने कमज़ोर बना देता है।

वह छतरी के नीचे से बाहर आ गया है, जैसा कि हमने बात की, जिससे ईसाइयों को बचाया गया है। शरीर पापी स्वभाव का एक रूपक है, और शरीर शरीर का एक रूपक है। यह शरीर एक कथन है, लेकिन हम मांस का शरीर हैं।

लेकिन यह अर्थों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करता है। यह सामूहिक दृष्टिकोण पापपूर्ण अभिविन्यास के पापी स्वभाव के दृष्टिकोण से थोड़ा अधिक जुड़ा हो सकता है। यह पापी वासनाओं को नष्ट करता है जो समस्या का कारण बनती हैं और इस प्रकार व्यक्ति को पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस स्थिति में शरीर पाप-ग्रस्त है, जो आत्मनिर्भरता से भरा हुआ है और परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध छेड़ता है, जो सच है। मेरा मतलब है, यह इस व्यक्ति के साथ चल रहा था। इस पापी स्वभाव को पवित्रीकरण प्रक्रिया के हिस्से के रूप में मार दिया जाना है।

जब हम ऐसा करने में विफल होते हैं, तो हम इसे जीवन के एक पैटर्न के रूप में करते हैं; हमें ऐसा करने के लिए अतिरिक्त प्रेरणा की आवश्यकता होती है, और समुदाय हमें प्रेरणा देता है। लेकिन इस संदर्भ में पश्चाताप को लक्ष्य के रूप में उल्लेख नहीं किया गया है, हालांकि यह निश्चित रूप से माना जाता है। पश्चाताप करने के लिए शैतान को साधन के रूप में रखना, उसे शैतान को सौंपना अजीब लगता है।

लेकिन उन्होंने मृत्यु के दृष्टिकोण की अपनी आलोचना में ऐसी समानताओं से इनकार किया। यह गारलैंड की ओर इशारा करता है। मैंने इसे आपके लिए बहुत अच्छी तरह से नहीं पढ़ा।

तो, कॉर्पोरेट दृष्टिकोण के बारे में कई मुद्दे हैं। तो, आपको व्यक्ति के शरीर के बारे में व्यक्तिगत दृष्टिकोण मिलता है, जो उसे पीछे धकेलता है। आपके पास कॉर्पोरेट दृष्टिकोण है, खमीर को बाहर निकाल दें, और बाहर निकलने पर, वह अपने पाप के संपर्क में आएगा, अगर वह सच्चा आस्तिक है तो उसका सामना करें, वह पश्चाताप करेगा और वापस आएगा।

इनमें से किसी भी दृष्टिकोण को अपनाने के पीछे कुछ तर्क है। परिणामस्वरूप, जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, एक तीसरा प्रस्ताव है, एक अधिक समग्र समझ जहां दोनों दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करने पर विचार किया जाता है, कि यह केवल एक या दूसरा नहीं है, बल्कि यह दोनों का एक संयोजन है। पश्चिमी व्याख्या हमेशा चीजों को एक चीज के विपरीत दूसरी चीज में बांधना पसंद करती है।

शायद, इस मामले में, दोनों बातें सच हैं। बाइबल भौतिक और आध्यात्मिक को विभाजित नहीं करती है, जैसा कि ये विचार कर सकते हैं। इसलिए, मैं कहूंगा कि बाइबल शरीर के बारे में कहती है; इसका मतलब यह नहीं है कि यह पापी स्वभाव के बारे में नहीं सोचती है, लेकिन यह इन सभी चीजों को विभाजित नहीं करती है।

और इसलिए, शरीर ही काफी है। शरीर ही सब कुछ समाहित करता है। तो फिर हम इसे जटिल क्यों बनाना चाहते हैं और पापी स्वभाव को देखकर और भौतिक पक्ष के बारे में न सोचकर इसे दो भागों में क्यों बाँटना चाहते हैं? बाइबल हमेशा जीवन के बारे में समग्रता से बात करती है।

यह कभी भी चीजों को अलग-अलग इकाईयों में विभाजित नहीं करता है। शायद उपरोक्त सभी बातें पॉल के दिमाग में रही होंगी, लेकिन वह मांस शब्द का उपयोग करता है, जो मौखिक वर्णन के संदर्भ में करना स्वाभाविक बात थी। इसलिए, अपने पैसे का भुगतान करें, अपनी पसंद चुनें, जैसा कि लियोन मॉरिस कहा करते थे, लेकिन तथ्य यह है कि इनमें से प्रत्येक के पास संपूर्ण को समझने में योगदान देने के लिए कुछ है, लेकिन मैं इस बात पर वापस लौटना चाहूंगा कि पॉल अधिक स्वाभाविक रूप से केवल मांस शब्द का उपयोग करेगा।

और अगर आपने कहा, पॉल, क्या आपका मतलब है कि वह अपने पाप के संपर्क में आने वाला है? पॉल कहेगा, ठीक है, ज़रूर, जब आप शारीरिक या भावनात्मक रूप से चोटिल होते हैं, लेकिन इनमें से कोई भी श्रेणियों में विभाजित नहीं है। यह पूरी बात है। आप भावनात्मक रूप से चोटिल होते हैं, आप शारीरिक रूप से चोटिल होते हैं, आप आंतरिक रूप से चोटिल होते हैं, और आपका आंतरिक भाग, जहाँ आपका व्यवहार ईश्वर के विरुद्ध रहा है, यह उस प्रवृत्ति को वापस ईश्वर के संपर्क में लाने वाला है।

एक सच्चे आस्तिक के साथ, समुदाय यह कह रहा है कि आप गलत थे, आपने पश्चाताप नहीं किया, हम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते, यह ठीक नहीं है, इसे छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है, आप बाहर हैं, यह काफी संदेश देता है। मुझे नहीं पता कि मैंने कभी हमारी संस्कृति, हमारी ईसाई संस्कृति में ऐसा होते देखा है या नहीं। ऐसा करना एक मण्डली के लिए बहुत कठिन काम है, और इसे कानूनी दृष्टि से हमेशा गलत समझा जा सकता है।

कुछ ऐसे माहौल होते हैं जहाँ लोग दूसरों का न्याय करना पसंद करते हैं। हमें एक-दूसरे का न्याय करना है, लेकिन इस न्याय को करना, यह न्याय करना बहुत स्पष्ट लगता है, लेकिन लोगों के पापों से निपटना और साथ ही लोगों की देखभाल करना और पश्चाताप की तलाश करना बहुत मुश्किल काम है। लेकिन बाइबल हमें ऐसा करने से बचने का विकल्प नहीं देती है।

यह हमारी जिम्मेदारी है, लेकिन हमें इसे पूरी विनम्रता के साथ करना चाहिए। प्यार के साथ इस उम्मीद के साथ कि व्यक्ति को पता चल जाएगा कि वे गलत हैं और हम खुद बहुत घमंडी नहीं बनेंगे, लेकिन भगवान की कृपा से, मैं वहाँ जाता हूँ। और इस सब का उद्देश्य यह है कि अंत में आत्मा को बचाया जा सके। यह स्पष्ट नहीं है कि मनुष्य की प्रकृति के भौतिक पक्ष का विनाश, यानी मृत्यु भी, अमूर्त पक्ष के उद्धार को कैसे प्रभावित कर सकती है।

मृत्यु के दृष्टिकोण को इसे अंतिम अंत के रूप में देखना चाहिए। यह 1 कुरिन्थियों 3:15 को प्रतिबिंबित कर सकता है, सिद्धांत रूप में, मनुष्य का मूल स्व बच जाता है, लेकिन कोई पुरस्कार नहीं है। लकड़ी, घास और टूठ के बारे में यही कथन है।

दिन के अंत में, हम स्पष्टता और विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि एक आस्तिक के अनुशासन का लक्ष्य पश्चाताप और पुनर्स्थापना है। पुनर्स्थापना की प्रकृति हमेशा अन्य ग्रंथों द्वारा भी निर्देशित होगी, जो समुदाय में व्यक्ति की भूमिका पर निर्भर करती है। व्यक्ति की स्थिति यह है कि वे अनुशासित हैं।

कुछ लोगों ने यह सवाल उठाया है कि क्या यह व्यक्ति अविश्वासी था? इस सवाल का जवाब 5:5 की व्याख्या और इस मुद्दे से प्रभावित है कि वह 5:5 पर आपके फैसले से था या नहीं। मुझे लगता है कि वह खुद एक आस्तिक था। मुझे यकीन नहीं है कि पॉल ने ठीक उसी तरह आगे बढ़ना या वही बातें कहना पसंद किया होगा जो उसने की थीं।

इसके अलावा, यदि आप पापी स्वभाव के बारे में सोचते हैं, तो यह अविश्वासी के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त होगा। हम इस पाठ की चुनौतियों से सिर्फ यह कहकर नहीं बच सकते कि वह व्यक्ति वैसे भी बचा नहीं था। नहीं, वह एक विश्वासी था जिसे अपने निर्णयों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता थी।

यह बहुत कठिन था। यह बहुत बाहरी था। हम आशा करते हैं कि 2 कुरिन्थियों में, जिस व्यक्ति को दुःख में लाया गया था और वह समुदाय में वापस आया, वह वही व्यक्ति है।

वास्तव में, यह बात पृष्ठ 73 के शीर्ष पर मौजूद पाठ में आती है। क्या यह वही व्यक्ति है जो 2 कुरिन्थियों 2, पद 5 से 11 में वर्णित है? चूंकि हम इस पर इतना विचार कर रहे हैं, तो क्यों न मैं आपको इसका कुछ अंश पढ़कर सुनाऊँ? 2 कुरिन्थियों 2, पद 5 से 11. यदि किसी ने दुःख पहुँचाया है, तो पौलुस कहता है, उसने मुझे उतना दुःख नहीं पहुँचाया जितना उसने कुछ हद तक आप सभी को दुःख पहुँचाया है।

इसे बहुत ज़्यादा गंभीरता से न लें। उसे जो सज़ा दी गई, क्या वह वही है, वह आदमी जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं? बहुमत के हिसाब से यह पर्याप्त है। अब, इसके बजाय, आपको उसे माफ़ करना चाहिए और उसे दिलासा देना चाहिए ताकि वह अत्यधिक दुःख से अभिभूत न हो जाए।

इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप उसके प्रति अपने प्यार की फिर से पुष्टि करें। मैंने आपको पत्र लिखने का एक और कारण यह देखना था कि क्या आप परीक्षा में खड़े हो सकते हैं और आज्ञाकारी और सब कुछ कर सकते हैं। आप जिस किसी को भी माफ़ करते हैं, मैं भी उसे माफ़ करता हूँ।

और जो कुछ मैंने क्षमा किया है, यदि क्षमा करने योग्य कुछ था, तो मैंने तुम्हारे लिए मसीह की दृष्टि में क्षमा किया है। शैतान को दिलचस्प बनाने के लिए, है न? वह इसका उल्लेख करता है। ताकि शैतान हमें धोखा न दे सके, क्योंकि हम उसकी चालों से अनजान नहीं हैं।

खैर, यह साबित करना असंभव है कि ये वही लोग हैं। मेरे दिमाग में थोड़ा सा निहितार्थ है कि वे वही हैं, और मुझे लगता है कि मैं इसे चुनूंगा, स्पष्ट रूप से। कि हाँ, यह काम किया।



बहिष्कार ने काम किया। हमें नहीं पता कि इसे काम करने में कितना समय लगा। बहुत ज़्यादा समय नहीं, लेकिन इतना समय कि यह व्यक्ति अपने पापों और अपने कर्मों से पूरी तरह परिचित हो सके।

मुझे इस मामले में यह बात दिलचस्प लगी कि महिला का कभी ज़िक्र ही नहीं किया गया। आमतौर पर, प्राचीन संस्कृति में, बहुत ज़्यादा मर्दाना होने के कारण, सारा दोष महिला को ही दिया जाता है। लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं है।

लेकिन रोम के कोरिंथ में, पुरुषों का वर्चस्व था। महिलाएँ अभी कुछ खास तरीकों से आगे आना शुरू ही कर रही थीं। वास्तव में, रोम खुद अवज्ञाकारी महिलाओं से परेशान था।

वे पुरुष-प्रधान संस्कृति द्वारा नियंत्रित होने के नियमों को तोड़ रहे थे। लेकिन पुरुष-प्रधान संस्कृति के बावजूद, पॉल इन सभी ग्रंथों में महिला को नहीं, बल्कि पुरुष को जवाबदेह ठहराता है। और फिर भी, वह भी दोषी थी।

लेकिन हमें पूरी कहानी नहीं दी गई है, कहानी का सिर्फ़ एक पहलू बताया गया है। बहुत सारी जानकारी दी गई है, है न? बाइबल को सरलता से पढ़ना कोई बड़ी बात नहीं है। बाइबल चुनौतीपूर्ण है, और हमें उस चुनौती का सामना करने के लिए कहा गया है।

चलिए आगे बढ़ते हैं। हमने इस बात पर चर्चा की है कि इस आदमी ने अनाचार किया या वह आदमी जिसने अनाचार किया। पौलुस ऐसे पाप को मन में रखने की गंभीरता को दर्शाता है।

अब, वह पूरे समुदाय को संबोधित करने के लिए छंद छह से आठ में बदल जाता है। आइए इस पर ध्यान दें। इस पैराग्राफ में, यानी छंद छह से आठ में, पौलुस उनके पापपूर्ण घमंड को उजागर करने के लिए खमीर की कल्पना का उपयोग करता है।

यह वास्तव में बाइबिल से है, है न? यह वास्तव में ओल्ड टेस्टामेंट है। याद रखें, वह एक यहूदी है। वह शायद एक फरीसी है।

वह पुराने नियम को जानता है। वह रूपकों और बाइबिल की कल्पना को समझता है। खमीर पुराने नियम में पाप का एक प्रमुख रूपक था।

इसलिए उन्हें अपने सभी त्यौहारों में अखमीरी रोटी का इस्तेमाल करना पड़ता था। यह पापपूर्ण शेखी बघारना है, ऐसा शेखी बघारना जो हैसियत से प्रभावित होकर कपटपूर्ण रवैया दर्शाता है। विंटर इसे इसी तरह से कहते हैं।

वह पाप को दूर करने और ईश्वरीय इच्छा के प्रति बुनियादी आज्ञाकारिता के विचार को प्रेरित करने के लिए पॉल द्वारा किए गए फसह के चित्रण का उपयोग करता है। इन यहूदी विचारों और 511 में दी गई सूची का अर्थ यह हो सकता है कि कुरिन्थ में ऐसे लोग मौजूद थे जो इन यहूदी बारीकियों को समझते थे। हम जानते हैं कि कुरिन्थ में यहूदियों का एक समुदाय था।

इस संबंध में कितने लोग थे? वे रोमन कोरिंथ में कैसे एकीकृत हुए थे? तो, गांठ को बाहर निकालो। इससे छुटकारा पाओ। मुझे लगता है कि एक पल के लिए रुकना और इस तथ्य पर विचार करना महत्वपूर्ण है कि पॉल यहाँ पुराने नियम को एक अधिकार के रूप में उपयोग कर रहा है।

यह एक आधिकारिक छवि है। पुराना नियम पुराना नहीं है। पुराने नियम में ईश्वरीय नैतिक शिक्षा का एक बड़ा हिस्सा है जो मानक है।

यह संस्कृतियों से परे है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ बहुत से लोग बाइबल की शिक्षा के कुछ पहलुओं को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। और वे पुराने नियम में जाना पसंद करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि पुराने नियम में सिखाई गई नैतिक पाबंदियों से खुद को मुक्त करना आसान है।

मेरे पास आपके लिए निराशाजनक खबर है। यह इतना आसान नहीं है। नया नियम बार-बार वापस आता है और नैतिक निर्देश के संबंध में पुराने नियम को मान्य करता है।

यीशु भी यही करते हैं, यहाँ तक कि गलातियों 5 में भी। पौलुस ने " क्या तुम नहीं जानते?" का अलंकारिक प्रयोग किया है। इसे हाइलाइट करें। क्या तुम नहीं जानते? 5:6, 6:2, 6:3, 6:9, 6:15, 6:16, 6:19, और आप अन्य स्थानों की तुलना कर सकते हैं। क्या तुम नहीं जानते? देखिए, यह एक अलंकारिक युक्ति है।

यह क्या करता है? हमारा ध्यान खींचता है। इसे मण्डली के सामने पढ़ने के बारे में सोचें। पाठक वहाँ एक अच्छा पाठक है।

क्या आप नहीं जानते? और फिर वह पॉल की कही बातों पर आता है। यह पाठक और श्रोताओं के बीच, लेखक और उसके श्रोताओं के बीच आदान-प्रदान का कारण बनता है - बहुत महत्वपूर्ण बयानबाजी उपकरण।

बड़े पैमाने पर दोहराव और दोहराव हमेशा समझ की खिड़की होते हैं। इस वाक्यांश का बड़े पैमाने पर दोहराव निश्चित रूप से उन लोगों के कानों में गूँजेगा जिन्होंने पाठ को जोर से पढ़ा। इसके अलावा, जो कुछ वे नहीं जानते हैं वह सुसमाचार की नैतिक अपेक्षाओं से संबंधित है।

परिणामस्वरूप, उन्होंने अपनी अवज्ञा के कारण संतों के बीच अपनी प्रतिष्ठा और स्थिति खो दी है। क्या यह चतुराई नहीं है? इतना ही नहीं, जैसा कि पॉल कहते हैं, ठीक है, आप रोमन कुरिन्थ में हैं, और आप स्थिति से काम करना चाहेंगे, लेकिन आप यहाँ मुसीबत में पड़ गए हैं क्योंकि आपने बाइबिल के रीति-रिवाजों से अधिक स्थिति का उपयोग किया है। ठीक है, चलो बाइबिल की स्थिति के बारे में बात करते हैं।

आइए ईसाई स्थिति के बारे में बात करते हैं। आपके व्यवहार के कारण, आपने ईसाई समुदाय में अपनी प्रतिष्ठा खो दी है। आपने ईसाई समुदाय के अपने समूह में अपनी स्थिति खो दी है।

कुरिन्थ के कुछ लोगों की अभिजात्य प्रवृत्तियों के प्रकाश में यह कितनी चतुराईपूर्ण आलोचना है। ठीक है, तो आयत 1 से 8। अब आइए आयत 9 से 13 पर नज़र डालें। नंबर दो, पेज 73 के बीच में।

पौलुस ने कुरिन्थियों को अनैतिक भाई-बहनों के साथ संगति तोड़ने की ज़रूरत के बारे में याद दिलाया है, अगर आप चाहें तो। मैं इसे आपके लिए 5:9 से 13 तक पढ़कर सुनाता हूँ। फिर से, अगर हम उनके जैसे बनने जा रहे हैं, तो हमें परमेश्वर का वचन सुनना होगा।

उन्होंने इसे सुना। उनमें से ज़्यादातर ने इसे पढ़ा नहीं। उन्होंने इसे सुना।

पढ़ना एक विशेषाधिकार था, क्योंकि इसकी प्रतियाँ प्राप्त करना संभव था, जिन्हें आपको हाथ से लिखना होता था। इसलिए, जब यह ईसाइयों के बीच प्रसारित हुआ, तो संभवतः केवल बुजुर्गों के पास ही पहुँच थी, इसलिए नहीं कि उन्होंने पहुँच बंद कर दी थी, बल्कि इसलिए कि पहुँच सीमित थी। उनके पास बस वह दस्तावेज़ था।

इसलिए, ज़्यादातर लोगों को सुनने के ज़रिए जानकारी मिली। आइए सुनें कि पौलुस अनैतिक भाइयों, अनैतिक बहनों और चर्च में खुलेआम पाप में जी रहे लोगों के साथ संगति तोड़ने के बारे में क्या कहता है। पाप परमेश्वर की प्रकट इच्छा का उल्लंघन है।

यह कोई प्यारा सा एकल-अक्षर वाला शब्द नहीं है, मैं मज़ाक कर रहा हूँ, शब्दांश शब्द, लेकिन यह एक ऐसा शब्द है जो किसी चीज़ पर ईश्वर के सामने होने से जुड़ी हर चीज़ को दर्शाता है। 5:9, मैंने आपको अपने पत्र में लिखा था। यह वह दूसरा पत्र है, याद रखें कि हमने परिचय में उल्लेख किया था, जो हमारे पास नहीं है जब तक कि हमारे पास कहीं और टुकड़े न हों।

मैंने आपको अपने पत्र में लिखा था कि यौन अनैतिक लोगों के साथ संगति न करें। इसलिए, किसी समय, उसने पहले ही कोरिंथियन समुदाय को कामुकता के बारे में निर्देश दिया था, और उसने उनसे कहा था कि वे ऐसे लोगों के साथ भाग न लें जो खुलेआम ये काम कर रहे हैं। और उस समय, वे लोग संभवतः चर्च के बाहर के लोग थे।

हम अंदर हो सकते हैं, लेकिन शायद बाहर भी। श्लोक 10, इसका मतलब बिल्कुल नहीं है, इसलिए वे बाहर रहे होंगे, इसका मतलब बिल्कुल नहीं है कि इस दुनिया के लोग, ओह माफ़ करें, मैंने इसे उलट दिया, मैं अपने आप से आगे निकल रहा हूँ, उनका मतलब था कि वे लोग जो अंदर थे, इसका मतलब बिल्कुल नहीं है कि इस दुनिया के लोग जो अनैतिक या लालची और ठग हैं। तो, क्या हो रहा है? दो लोग, लोग अंदर, लोग बाहर।

पॉल ने पहले उनसे कहा था कि वे ऐसे लोगों से न जुड़ें जो अंदर होने का दावा करते हैं, और ऐसे रहते हैं जैसे कि वे बाहर हैं। और फिर पॉल वापस आता है, और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंश है, और कहता है कि जो लोग बाहर हैं उन्हें खुद का ख्याल रखना होगा यदि वे मेरी जिम्मेदारी नहीं हैं। ध्यान दें कि वह यहाँ क्या कहता है, इसका मतलब इस दुनिया के लोगों से बिल्कुल भी नहीं है, यानी बाहर के लोग, जो अनैतिक या लालची, ठग, मूर्तिपूजक हैं।

यदि ऐसा है तो तुम्हें इस संसार से चले जाना पड़ेगा। परन्तु अब मैं तुम्हें यह लिख रहा हूँ कि जो कोई अपने को भाई या बहन कहता है, परन्तु व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक, दोष लगानेवाला, पियक्कड़, या ठग है, उसके साथ संगति न करना। ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।

पॉल कहते हैं, चर्च के बाहर के लोगों का न्याय करना मेरा काम नहीं है? क्या आपको अंदर के लोगों का न्याय नहीं करना चाहिए? परमेश्वर बाहर के लोगों का न्याय करेगा। अपने बीच से दुष्ट व्यक्ति को निकाल दें। तो, बाहर भी है, अंदर भी है।

पॉल ने यहाँ भी एक बिल्कुल स्पष्ट चित्रण किया है। हम सुधार करने के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, इस अर्थ में कि हमें सुधार करने का अधिकार है। बेशक, हम इसके खिलाफ प्रचार कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हेरोदेस और उसके पापपूर्ण व्यवहार के खिलाफ प्रचार किया था।

हम इसके खिलाफ़ उपदेश दे सकते हैं। हम इसके खिलाफ़ बोल सकते हैं। अमेरिका जैसी कुछ संस्कृतियों में, हम इसके खिलाफ़ वोट कर सकते हैं।

हम इसके खिलाफ़ मार्च कर सकते हैं। हम इसके खिलाफ़ लॉबी कर सकते हैं। लेकिन हमें भोले नहीं बनना चाहिए और यह नहीं सोचना चाहिए कि बाहरी दुनिया पर हमारा अधिकार है।

हमारे पास आवाज़ है, और कुछ संस्कृतियों में, अन्य संस्कृतियों की तुलना में ज़्यादा आवाज़ है। कुछ संस्कृतियों में, आपकी कोई आवाज़ ही नहीं है। लेकिन पॉल एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन दे रहा है।

चर्च को दुनिया को सही काम करने के लिए बाध्य करने की जिम्मेदारी नहीं उठानी पड़ती। हमारी जिम्मेदारी है कि हम यह घोषित करें कि दुनिया को परमेश्वर के साथ सही व्यवहार करने की जरूरत है। यह नहीं कि हम उनकी माँ बनें, इस अर्थ में कि हम उन सभी चीजों का नाम लें जो उन्हें सही तरीके से करनी चाहिए।

क्योंकि वे हमारी छत्रछाया में नहीं हैं। हमारा उन पर कोई अधिकार नहीं है। हमारे पास आवाज़ है, लेकिन हमारे पास वह अधिकार नहीं है।

हमें अपनी खुद की छोटी सी जागीर, अपना खुद का छोटा सा राज्य, अपना खुद का छोटा सा राष्ट्र बनाना होगा, और जब तक वे हमारे कहे अनुसार नहीं करेंगे, तब तक कोई भी इसमें शामिल नहीं हो सकता। खैर, दुनिया में ऐसा नहीं होता। चर्च में ऐसा शायद ही कभी होता है।

यह दिलचस्प है, श्लोक 12. चर्च से बाहर के लोगों का न्याय करना मेरा क्या काम है? अब आप जानते हैं कि इसका मतलब यह नहीं है कि पौलुस के पास कोई निर्णय नहीं है। निश्चित रूप से, उसके पास एक निर्णय है।

उनका कहना साफ़ है। उन्हें व्यवहार करने के लिए बाध्य करना उनकी जिम्मेदारी नहीं है। आप दुनिया को व्यवहार करने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

आप अपने बच्चों को शायद ही व्यवहार सिखा पाएं। आपको क्या लगता है कि आप उन लोगों के साथ क्या करेंगे जो पूरी तरह से बाहर हैं? यदि आप ऐसी अपेक्षा रखते हैं, तो आप पूरी तरह से निराश हो जाएंगे क्योंकि आपकी अपेक्षा को पूरी तरह से खारिज कर दिया जाएगा। हेस ने अपने खंड में पृष्ठ 88 पर देखा कि 511 में दी गई सूची बहिष्करण ग्रंथों को प्रतिबिंबित कर सकती है जिनका उल्लेख व्यवस्थाविवरण में किया गया है।

और वे 5:13 में बहिष्कार कथन की ओर बढ़ते हैं, दुष्ट व्यक्ति को अपने बीच से निकाल दें। पुराने नियम को अध्याय 5 में बहुत अधिक एकीकृत किया गया है। व्यवस्थाविवरण में, आपके पास व्यभिचार, व्यभिचार, मूर्तिपूजा, दुर्भावनापूर्ण झूठी गवाही, विद्रोही शराबी बेटे, अपहरण और दास व्यापार का बहिष्कार है। कुरिन्थियों में, आपके पास यौन अनैतिकता है जो लालच और मूर्तिपूजा, गाली देने वालों, शराबी और लुटेरों से संबंधित है।

क्या यह दिलचस्प नहीं है? इन दोनों के बीच एक करीबी रिश्ता है। यह रिश्ता निश्चित रूप से विषयगत है, भले ही ऐसा न लगे कि वह व्यवस्थाविवरण का हवाला दे रहा है। लेकिन याद रखें, प्रेरित परमेश्वर के वचन से भरे हुए थे।

आपने पॉल को काटा, और उसने पुराने नियम को लहलुहान कर दिया। और वे पुराने नियम को सामने लाते हैं, कभी-कभी इसके वाक्यांशों के साथ भी, और वे शायद इसके बारे में सोच भी नहीं रहे थे या इसे उद्धृत करने की कोशिश भी नहीं कर रहे थे, लेकिन वे उस विश्वदृष्टि को प्रतिबिंबित कर रहे थे जिसका वे बहुत बड़ा हिस्सा थे। वे बाइबिल की शिक्षाओं से भरे हुए थे।

इसलिए, पौलुस ने पृष्ठ 74 पर चर्च की जिम्मेदारी के क्षेत्र को स्पष्ट किया है, जिसे हम पहले ही पद 12 और 13 में पढ़ चुके हैं। पौलुस का तात्पर्य बाहर नहीं बल्कि अंदर है। यह स्पष्टीकरण पाप पर निर्णय सुनाने को नकारता नहीं है।

आप जो चाहें कह सकते हैं। आपके पास आवाज़ है। बस आपके पास अधिकार नहीं है।

आप पुलिस वाले नहीं हैं। आप उन्हें टिकट नहीं दे सकते। आप चाहते होंगे कि आप ऐसा कर सकें, लेकिन आप ऐसा नहीं कर सकते।

आपके पास सिर्फ आवाज़ है, और आपको उस आवाज़ का इस्तेमाल जिम्मेदारी से करना चाहिए। यह चर्च के अधिकार और नियंत्रण की सीमाओं को दर्शाता है। चर्च दुनिया को नहीं चलाता, न ही दुनिया चर्च को चलाती है।

चर्च तो चर्च ही है। और हमारी कुछ संस्कृतियों में, खास तौर पर अमेरिकी संस्कृति में, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि इसका क्या मतलब है। हमें इन दो ग्रंथों पर वापस आना होगा।

और इस बात पर विचार करें कि इसका क्या मतलब है कि हम दुनिया को नहीं चला रहे हैं। यह कानूनी और राजनीतिक भागीदारी के समकालीन मुद्दे से संबंधित नहीं है। दूसरे शब्दों में, आप

इस पाठ का उपयोग यह कहने के लिए नहीं कर सकते कि गर्भपात के खिलाफ एक ईसाई संगठन बाइबिल के खिलाफ है।

नागरिक के तौर पर यह उनका अधिकार है। न ही आप यह कह सकते हैं कि गर्भपात के खिलाफ आपके पास एक ईसाई संगठन होना चाहिए, या आप बाइबिल के अनुसार नहीं हैं। देखिए, एक पक्ष दूसरे पर आरोप नहीं लगा सकता, और दूसरा पक्ष दूसरे पर आरोप नहीं लगा सकता।

अमेरिकी नागरिक के तौर पर हमें अपनी संस्कृति में अपनी बात रखने का अधिकार है, यहाँ तक कि ईसाई धर्म में भी। लेकिन हमें सावधान रहना होगा कि हम अधिकार से कैसे जुड़ते हैं। परमेश्वर ने हमें उसका अनुसरण करने के लिए बुलाया है।

और इसमें बहुत सी चीजें शामिल हैं। और उस भागीदारी का एक हिस्सा हमारी दुनिया में एक आवाज़ है। लेकिन अगर आप इस धारणा के तहत काम करते हैं कि आपको बिना मोक्ष के भी उस दुनिया को बदलना है, तो आप गलत धारणा के तहत हैं।

खैर, चुनौतीपूर्ण पाठ, है न? निश्चित रूप से बहुत अधिक विवरण हैं, लेकिन यही हम अध्याय 5 के साथ करने जा रहे हैं। खूब पढ़ें। मैं बहुत पढ़ता हूँ। जितना अधिक आप पढ़ेंगे, उतना ही बेहतर आप समझ पाएंगे, और उतना ही आप अपनी समझ का बचाव करने में सक्षम होंगे कि आपको क्या लगता है कि पाठ क्या सिखा रहे हैं।

आपका दिन शुभ हो, और हम आपको हमारे अगले व्याख्यान में देखेंगे।

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिया गया शिक्षण है। यह व्याख्यान 15 है, कुछ मौखिक रिपोर्टों/अफवाहों पर पॉल की प्रतिक्रिया। 1 कुरिन्थियों 5:5-13।